# यूहन्ना की दूसरी पत्री

*[illegible]*

इस पत्र का लेखक प्रेरित यूहन्ना है। 2 यूहन्ना में वह स्वयं को एक “प्राचीन” कहता है। इस पत्र का शीर्षक “यूहन्ना का दूसरा पत्र” है। यह पत्र तीन की श्रृंखला में दूसरा है जो यूहन्ना के नाम से है। इस दूसरे पत्र का लक्ष्य वे झूठे शिक्षक हैं जो यूहन्ना की कलीसियाओं में भ्रमण करते हुए प्रचार कर रहे थे। उनका लक्ष्य था अपने अनुयायी बनाकर अपने उद्देश्य के निमित्त मसीही अतिथि-सत्कार का अनुचित लाभ उठाएँ।

*[illegible]*

लगभग ई.स. 85 - 95

लेखन स्थान सम्भवतः इफिसुस था।

*[illegible]*

यह पत्र जिस कलीसिया को लिखा गया था उसे यूहन्ना “चुनी हुई महिला और उसके बच्चों के नाम” कहता है।

*[illegible]*

यूहन्ना ने यह पत्र लिखकर “उस महिला एवं उसके बच्चों” के प्रति अपनी निष्ठा दर्शाई है और उसे प्रोत्साहित किया है कि प्रेम में रहते हुए वे प्रभु की आज्ञाओं को मानें। वह उन्हें झूठे शिक्षकों से सावधान करता है और उन्हें बताता है कि वह अति शीघ्र उनसे भेंट करेगा। यूहन्ना उसकी “बहन” को भी नमस्कार कहता है।

*[illegible]*

विश्वासियों का विवेक

**रूपरेखा**

1. अभिवादन — 1:1-3
2. प्रेम में सत्य का निर्वाहन करना — 1:4-11

## 3. अन्तिम नमस्कार — 1:12,13

*[illegible]*

1 मुझ प्राचीन की ओर से उस चुनी हुई महिला और उसके बच्चों
के नाम जिनसे मैं सच्चा प्रेम रखता हूँ, और केवल मैं ही नहीं, वरन्
वह सब भी प्रेम रखते हैं, जो सच्चाई को जानते हैं।
2 वह सत्य *[illegible]**, और सर्वदा
हमारे साथ अटल रहेगा;
3 परमेश्वर पिता, और पिता के पुत्र यीशु मसीह की ओर से
अनुग्रह, दया, और शान्ति हमारे साथ सत्य और प्रेम सहित
रहेंगे।

*[illegible]*

4 मैं बहुत आनन्दित हुआ, कि मैंने तेरे कुछ बच्चों को उस
आज्ञा के अनुसार, जो हमें पिता की ओर से मिली थी, सत्य पर
चलते हुए पाया।
5 अब हे महिला, मैं तुझे कोई नई आज्ञा नहीं, पर वही जो
आरम्भ से हमारे पास है, लिखता हूँ; और तुझ से विनती करता
हूँ, कि हम एक दूसरे से प्रेम रखें।
6 और प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं के अनुसार चलें: यह
वही आज्ञा है, जो तुम ने आरम्भ से सुनी है और तुम्हें इस पर
चलना भी चाहिए।

*[illegible]*

7 क्योंकि बहुत से ऐसे भरमानेवाले जगत में निकल आए
हैं, जो यह नहीं मानते, कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया;
भरमानेवाला और मसीह का विरोधी यही है।

---

* **1:2** *[illegible]:* सुसमाचार की सच्चाई जिसे हमने अपना लिया हैं। सत्य कहा जा सकता है कि विश्वास रखनेवालों के हृदय में एक स्थायी निवास के लिये ले लिया गया है।

8 अपने विषय में चौकस रहो; कि जो परिश्रम हम सब ने किया
है, उसको तुम न खोना, वरन् उसका पूरा प्रतिफल पाओ।
9 जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना
नहीं रहता, *[illegible]*† । जो कोई उसकी
शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी।
10 यदि कोई तुम्हारे पास आए, और यही शिक्षा न दे, उसे न
तो घर में आने दो, और न नमस्कार करो।
11 क्योंकि जो कोई ऐसे जन को नमस्कार करता है, वह उसके
बुरे कामों में सहभागी होता है।

*[illegible]*

12 मुझे बहुत सी बातें तुम्हें लिखनी हैं, पर कागज और स्याही
से लिखना नहीं चाहता; पर आशा है, कि मैं तुम्हारे पास आऊँ,
और सम्मुख होकर बातचीत करूँ: जिससे हमारा आनन्द पूरा हो।
***(1 [illegible]. 1:4, 3 [illegible]. 1:13)***
13 तेरी चुनी हुई बहन के बच्चे तुझे नमस्कार करते हैं।

---

† **1:9** *[illegible]:* उसके पास परमेश्वर के सत्य का ज्ञान या मसीह के सम्मानीय सत्य की शिक्षा नहीं हैं।

# इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) हिंदी - 2019
# The Indian Revised Version Holy Bible in the Hindi language of India

copyright © 2017, 2018, 2019 Bridge Connectivity Solutions

Language: मानक हिन्दी (Hindi)

Translation by: Bridge Connectivity Solutions

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.
You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

- You include the above copyright and source information.
- If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.
- If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.
Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-04-11

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 11 Apr 2023
38a51cad-1000-51f5-b603-a89990bf4b77